कृषक प्रशिक्षण एवं इनपुट वितरण कार्यक्रम का सफल आयोजन

स्थान: ग्राम ताना, ब्लॉक - उन, जनपद शामली (उ.प्र.)

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा संचालित केंद्र सरकार की अनुसूचित जाति उप-योजना के अंतर्गत ग्राम ताना, जनपद शामली (उ.प्र.) में "आय सर्जन के लिए अवशेष प्रबंधन" विषय पर कृषक प्रशिक्षण एवं इनपुट वितरण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। इस योजना का संचालन डॉ. श्रीनिवास राव, निदेशक एवं डॉ. आर. एन. पडारिया, संयुक्त निदेशक (प्रसार), भा. कृ. अ. स., नई, दिल्ली के मार्गदर्शन में डॉ. संदीप कुमार लाल, नोडल अधिकारी द्वारा किया जा रहा है।

कार्यक्रम का शुभारंभ उपस्थित किसान भाइयों एवं बहनों के स्वागत से किया गया तथा ग्राम प्रधानों का पारंपरिक गमछा पहनाकर सम्मान किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में ग्राम ताना एवं आसपास के अनेक गाँवो से 200 के अधिक किसानों और ग्रामीण माहिलाओं सहित, ग्राम प्रधान श्रीमती चांदकली, श्री सलेक चंद्र चौधरी, श्री सुधीर चौधरी, श्री दिनेश कुमार, श्री संजीव सिंह, श्री मोहित कुमार, श्री आशीष कुमार, श्री कपिल, श्री सुधीर एवं श्री यश कुमार ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

इस अवसर पर संस्थान के कृषि वैज्ञानिक – डॉ. रेनू सिंह, डॉ. ओ. पी. सिंह, डॉ. विश्वनाथ यल्लमले, डॉ. मलखान सिंह, डॉ. गोगराज जाट एवं श्री धर्मपाल सिंह उपस्थित रहे। विशेषज्ञों ने किसानों को मृदा सैंपलिंग, फसल बीमा, फसल विविधीकरण, अवशेष प्रबंधन तथा फसलों में मूल्य संवर्धन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षण दिया। कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को आधुनिक तकनीकों को अपनाने और संस्थान द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया ताकि वे अपनी आय और उत्पादकता में वृद्धि कर सकें।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. रेनू सिंह ने किसानों को बदलते पर्यावरणीय परिवेश में उन्नत तकनीकों से खेती करने तथा पराली जलाने से होने वाले नुकसान के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने किसानों को पराली प्रबंधन के विभिन्न उपायों तथा पराली को ऊर्जा के स्रोत के रूप में उपयोग करने के तरीकों के बारे में भी जागरूक किया। डॉ. ओ. पी. सिंह ने फसल विविधीकरण के महत्व एवं लाभों पर प्रकाश डालते हुए बताया, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और किसानों की आय में भी वृद्धि होती है। डॉ. विश्वनाथ यल्लमले ने बीज गुणवत्ता परीक्षण की प्रक्रिया और उसके महत्व की जानकारी दी। श्री धर्मपाल सिंह ने किसानों को उन्नत बीजों की उपलब्धता एवं उनके प्रयोग से होने वाले लाभों के बारे में बताया। डॉ. गोगराज ने सब्जी फसलों की खेती के महत्व और उनके उचित प्रबंधन के तरीकों पर चर्चा की। डॉ. मलखान सिंह ने किसानों को फसलों में रोगों की पहचान एवं रोग प्रबंधन से संबंधित जानकारी दी और समय पर नियंत्रण उपाय अपनाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम के अंत में किसानों को संस्थान द्वारा चयनित बीज एवं कृषि सामग्री वितरित की गई तथा एफ.पी.ओ. (किसान उत्पादक संगठन) बनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया।